पुरंदरदास

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 109

पुरंदरदास

तेलुगु मूल

डॉ. एस.गंगप्पा

अनुवाद

डॉ.बालशौरि रेड्डी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2013

Srinivasa Bala Bharati - 109
(Children Series)

PURANDARADASU

Telugu Version
Dr. S. Gangappa

Translator
Dr. Balasauri Reddy

Editor-in-Chief
Prof. Ravva Sri Hari

T.T.D. Religious Publications Series No.964
©All Rights Reserved

First Edition - 2013

Copies :

Price :

Published by
L.V. Subrahmanyam, I.A.S.,
Executive Officer
Tirumala Tirupati Devasthanams
Tirupati.

Printed at
Tirumala Tirupati Devasthanams Press
Tirupati.

प्राक्कथन

बच्चों का हृदय पुष्पों की भांति निर्मल होता हैं। उत्तम कपूर से बढ़ कर सुवासित उन के दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उन में हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिर काल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से श्रीनिवास बाल भारती का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य को बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सब को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी रघुनाथाचार्य आभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.वी.रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्धेश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फल स्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

आर. श्रीहरि
एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्।

स्वागत

श्रीनिवासदयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी ।
भारती जयताल्लोके भारतीयगुणोज्ज्वला ।।

विश्व के समस्त भूभागों में सभ्यता संस्कृति, नैतिक तथा धार्मिक आदर्शों के लिए भारतभूमि अग्रगण्य है। इस धरती पर जन्म लेनेवाला प्रत्येक व्यक्ति अधर्म का सामना करके, धर्म के आचरण में आपने जीवन को अर्पित कर अपूर्व यश प्राप्त कर चुका है। ऐसे महान व्यक्तियों का सान्निध्य हमारे लिए सुख-संतोष का कारणभूत होता है। उनके जीवन के आदर्शों के स्मरण मात्र से हम धन्य हो जाते हैं। ''मैं भारतीय है।'' यह परंपरागत रूप से आचरण में स्थित संप्रदाय है। ''यह मेरा कर्तव्य हैं'' मान कर ही प्रत्येक बालक और बालिका अपने को देश के लिए अर्पित करते है।

इस महान देश में अनेक संत, आचार्य, महापुरुष महापतिव्रताएँ तथा महान वीर पैदा होकर हमारी संस्कृति की स्थापना के कारण भूत बने। स्वच्छ व सुंदर जीवन वाहिनी का प्रवाह हम तक पहुँचाया। ओह! हम लोग कितने भाग्यवान है। हमारे पीछे कितना भव्य इतिहास है। ऐसे महानुभावों का जन्म यदि इस भूखंड पर न होता है ऐसी महती संस्कृति हमें उपलब्ध न होती।

उनके आदर्शों को समझना, उनके इतिहास का मनन करना हमारे लिए अत्यंत ज्ञान का भण्डार होगा। विद्या का अभ्यास होगा। यह अभ्यास भविष्य में हमारे जीवन-प्रवाह को कुछ वर्षों तक अक्षुण्ण बनाये रखकर प्रेरणा के सुवास को फैला सकेगा। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए श्रीनिवास बालभारती का उद्भव हुआ है। अनेक महानु भावों की जीवनियों को आप लोगों के समक्ष उपस्थित कर रही है इसलिए बच्चों आओ, आओ।

पूर्ण हृदय से तुम्हारा स्वागत है।

प्रोफेसर एस.बी. रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक

परिचय

मानव जीवन बुद्बुद् प्राय है। कोई यह नहीं जानता है कि न कब क्या होनेवाला है। लेकिन हर मानव शाश्वत जीवन पाने की कामना से जमीन-जायदाद, धन-संपत्ति, स्वर्ण, रत्न इत्यादि कमाने का लालसा रखता है, आनिश्चित भविष्य के लिए वर्तमान को नरक तुल्य बना लेता है। इस सत्य को समझने तक जीवन-यात्रा समाप्त हो जाती है। लेकिन कतिपय महानुभाव ईश्वर के अनुग्रह से सत्य को समझ कर अज्ञान रूपी अंधकार को चीर कर अनंत तेजस में प्रवेश करते हैं। एक महा लोभी के जीवन में साक्षात यही घटित हुआ।

वह एक करोडपति जौहरी था। एक दिन एक दरिद्र ब्राह्मण ने उन से थोडी सहायता की याचना की। थोडे सिक्के देकर भेज दिया। थोडी देर बाद वह याचक पुनः आ पहुँचा और एक नथ देकर पूछा। ''यह नथ ले कर इस की कीमत दे दीजिए'' वह धनी व्यक्ति नथ को देख विस्मय में आगया वह उस की पत्नी का था। उसने याचक से कहा- ''अच्छी बात है। मैं जरूर दूँगा तुम थोडी देर रुक जाओ। यह कहकर वह अपने घर पहुँचा। पत्नी से पूछा-'' तुम्हारा नथ कहाँ?'' पत्नी ने सोचा कि सच्ची बात कहने पर उस का पति नाराज हो जाएगा फिर क्या था, घर के भीतर पहुँची जहर पीने के लिए तैयार हो गयी।

आश्चर्य की बात है कि विषभरी उस कटोरी में अचानक नथ आगिरा। उसे लेकर व्यापारी अपनी दूकान पहुँचा। वहाँ पर उसने जो नथ छिपा कर रखा था, वह गायब था। यह कैसे घटित हुआ। व्यापारी विस्मय में आगया। उसने भांप लिया कि यह ईश्वर की लीला है। उसे लगा कि ईश्वर के अनुग्रह के सामने ये सब धन-संपत्ति तिनके के समान है। उसने अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बांट दी, फिर क्या था। वह एक महान भक्त बन गया। जानते हो वह महानुभाव कौन हैं। नवकोटि नारायण नामसे प्रसिध्द वह करोडपति श्रीनिवास नायक हैं। उसके बाद वे व्यास राय के शिष्य बने। भगवान पुरंदर विट्ठल पर लाखों पदों की रचना की। फिर वे ही पुरंदरदास नाम से लोकाप्रय हुए और पदकविता पितामह नाम से प्रसिध्द हुए।

दास कूट के मूल पुरुष बने पुरंदर दास की भक्ति और वैराग्य हमारे लिए मार्गदर्शन करें!

प्रोफेसर.एस.बी. रघुनाथाचार्य

पुरंदरदास

संगीत पितामह

''दुरितव्रातमु लेल्लनु
परिमार्चेडि हरिगुणमुल बाडुचु नेपुडुन्
परवशुडै वेलयु पुरं
दर दासुनि महिमलनु दलचेद मदिलोन्''

(प्रल्लाद भक्तविजयमु)

(अर्थात दुष्ट विचारों को निर्मूल करनेवाले भगवान विष्णु के गुणों का सदा गान करता रहूँगा। मैं अपने मन में भक्ति भाव में निमग्न पुरंदरदास की महिमाओं का स्मरण करूंगा)

नादोपासना के माध्यम से मुक्ति को प्राप्त वाग्गेयकर श्री त्यागराज ने पुरंदरदास की प्रस्तुति की। ''दासों के दास पुरंदरदास'' उक्ति से अपने गुरुदेव व्यासराय द्वारा प्रशंसा के पात्र बने श्री पुरंदरदास एक महापुरुष हैं। शिष्यों के द्वारा गुरुओं की प्रशंसा करना इस लोक में सहज है। किंतु शिष्य यदि गुरु के मुंहसे प्रशस्ति पाता है तो वह एक असाधारण विषय हैं। इसलिए पुरंदरदास महा मानव है। अपने गुरुदेवों की प्रशंसा के पात्र बन दासकूट के प्रमुख व्यक्ति के रूप में यश प्राप्त महापुरुष पुरंदरदास हैं।

कन्नड भाषा में पदों की रचना करके संगीत को सुनिशिचत स्वरूप प्रदान करनेवाले वाग्गेयकारों में प्रमुख स्थान प्राप्त कर पुरंदरदास ''कर्नाटक संगीत-पितामह'' नाम से विख्यात हुए।

संस्कृति का क्षरण

पुरंदरदास का जन्म उस विषम स्थिति में हुआ था, जब कि सारे देश में विकृतियाँ पनप रही थीं। उन दिनों में सर्वत्र धार्मिक विद्वेष व्याप्त था। जनता एक प्रकार से अंधकार में थी। कुछ लोगोंने तत्कालीन स्थिति को सही माना। कतिपय साहसी व्यक्तियों ने सामाजिक कुरीतियों में परिवर्तन लाने का संकल्प किया। साधारण प्रजा अपनी रुचि के अनुरूप संप्रदायों का अनुसरण कर रही थी। कुछ मेधावी लोगों ने अनुभव किया कि अंत में सत्य की विजय होगी। मुसल्मानों के शासन में भारतीय संस्कृति के परिरक्षण में खतरा पैदा हुआ था। मुसल्मानों के धार्मिक विचारों विश्वासों एवं संप्रदायों के प्रभाव के कारण भारतीय संस्कृति के विच्छिन्न होने की स्थिति पैदा हो गयी थी। ऐसी हालत में बसवेश्वर ने जन्म लेकर वीर शैव मत (धर्म) की स्थापना की। हमारे हिन्दू धर्म की रक्षा करने के प्रयत्न में बसवेश्वर के साथ वचन कर्ता भी असफले रहें।

वैष्णव धर्म का विकास

इन स्थितियों में विद्यारण्य स्वामी के अनुग्रह से हरिहर राय तथा बुक्कराय ने विजय नगर साम्राज्य की स्थापना की। दक्षिणापथ में हिन्दू धर्म, हिन्दू सभ्यता व संस्कृति की रक्षा करने का दृढ निर्णय लिया। क्रमशः प्रौढ देवराय तथा कृष्णदेवराय के शासन काल में वैष्णव धर्म का प्रभाव बढ़ा। विजय नगर-साम्राज्य के ध्वज की छाया में समस्त दक्षिणापथ सुख-शांति के साथ सुसंपन्न रहा। इसी काल खंड में अनेक महानुभाव हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान तथा धार्मिक समैक्यता केलिए विशेष प्रयास

किया। इस का तात्पर्य यह है कि इसके दो तीन शताब्दियों के पूर्व बसवेश्वर के मार्ग दर्शन में वीरशैव मतका जैसा विपुल प्रचार हुआ, उसी के साथ वैष्णव धर्म का भी प्रभाव बढ़ने लगा। इस के प्रेरक यदि हम व्यास राय तथा पुरंदरदास को माने तो ज्यादा समुचित होगा।

उन में से एक बने

कृष्णा तथा तुंगभद्रा नदियों के मध्य भूभाग में अनेक महानुभाव एवं अवधूतों का जन्म हुआ। उन लोगों ने जनता में प्रबोध किया कि ईश्वर एक ही हैं, मुक्ति का मार्ग भक्ति है और समस्त प्रजा के मध्य सैभ्रातृत्व का होना अवश्यंभावी है। आध्यात्मिक चिंतन तथा आत्मिक प्रेरणा के फल स्वरूप ही सामाजिक तथा धार्मिक संबंधी आन्दोलन पैदा हुए। इन आन्दोलनों ने भारतीय संस्कृति का पुनरुत्थान करके स्वर्णिम भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया। नेताओं के बिना जनता नहीं, किंतु जनता के मनोभावों को समझ कर उन में से एक बन कर जो उनका मार्ग दर्शन करता है। वही सच्चा नेता होता है। ऐसे माहौल में पुरंदरदास का जन्म हुआ।

श्रीनिवास बनाम पुरंदरदास

पुरंदरदास का असली नाम यह नहीं है। ऐसा मालूम होता है कि उनके कई नाम थे।- श्रीनिवास नायक या शीनप्पा, तिरुमल रायप्पा या तिम्मप्प, कृष्णनायक या पुरंदर विठल आदि उनके नाम थे। लेकिन वरदप्प नायक के पुश्र श्रीनिवास नायक नामही विशेष लोकप्रिय रहा है। श्रीनिवास नायक ने अपनी समस्त संपदाओं को त्याग कर गरीबी को (दारिद्र्य) स्वीकार किया। भगवान का नाम-स्मरण करते व्यासराय के

आश्रय में गये। व्यासराय से उपदेश ग्रहण कर ''पुरंदर विठल' नाम से पदों की रचना करना आरंभ किया। इस कारण उनका नाम पुरंदरदास सार्थक हुआ। उस समय से पुरंदरदास कन्नड भाषा में उत्तम वाग्गेयकार के रूप में विख्यात हुए।

पुरंदर गाँव में

कतिपय विद्वानों का विचार है कि श्रीनिवास का जन्मस्थल पुरंदर घड़ है। आज यह गांव महाराष्ट्र में पड़ता है, किंतु प्राचीन काल में वह गांव कर्नाटक राजाओं के अधीन में था। उस समय उस प्रदेश की व्यावहारिक भाषा कन्नड़ ही रही। कहा जाता है कि उस काल में वह गांव रत्नों के व्यापार का केन्द्र था। उस शहर में श्रीनिवास नायक के पिता एक प्रसिध्द रत्नों के व्यापारी थे। इतिहास कारों के विचार से श्रीनिवास नायक का गांव पुरंदर घड़ अथवा पुरंदरालयम या पाकशासपुरम नाम से व्यवहृत था। कतिपय विश्वस्त सूत्रों के आधार पर यह निर्णय लिया गया है कि यह गांव जिला शिवमोग्गा के अंतर्गत तिर्थहक्कितालूके में स्थित ''पुरंदर'' है। उस जमाने में वह एक मशदूर व्यापार केन्द्र था। ब्राह्मणों के परिवारों के साथ नायक शब्द जुडता था। उस जमाने में वह शहर विद्वानों, भक्तों तथा मेधावियों का निलय था। पांडुरंग की भक्ति का भी वहाँ विशेष प्रचार था। यह शहर पश्चिम में स्थित उडुपी तथा ईशान में स्थित पंडरीपुर के बीच बसा था। श्रीनिवास नायक के क्रमशः बिजापुर, सोल्लापुरम, पुरंदरपुरम, हम्पी इत्यादिनगरों के साथ व्यापारिक संबंध थे। ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीनिवास पंडरीपुरम तथा हम्पी नगरों में ही अपना अधिकांश समय बिताते थे।

अन्नमाचार्य और पुरंदरदास

कर्नाटक के कतिपय विद्वानों का मत है कि पुरंदरदास का जीवन-काल 1484 -1564 के मध्य है। लगभग ४० वर्ष की आयु में श्रीनिवास नायक श्री व्यासराय के दर्शन करके उनसे दीक्षित हुए और पुरंदरदास नाम से प्रसिध्द हुए। कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार श्रीनिवास नायक का जन्म 1480 में हुआ था। यह निर्णय भी सही नहीं हो सकता, क्योंकि इस तथ्य का प्रमाण हमें उपलब्ध है कि उन्हीं दिनों में तेलुगु में विशेष ख्याति प्राप्त वाग्गेयकार जो संकीर्तनाचार्य तथा पदकविता पितामह नाम से विख्यात थे, उनसे तिरुपति में पुरंदरदास ने भेंट की थी।

''तनरु पुरंदर दासाव्हयुंडु
परम भागवतुडै परुगुचु नंद
वर कुलाग्र गणियैन वैष्णवोत्तमुडु
. . . . . .
. . . . . ताल्लपाकशासनुडन्नमय्य
वेन्नुनिगाने भाविंचि कीर्तिंचि
सन्नुति सेय नाचार्य वर्युंडु
नतनि विट्टलुनिगा ननयंबु दलचि
प्रति लेनि गतुल संभाविंचेनपुडु''

अर्थात पुरंदरदास ने अत्यंत प्रसिध्दि प्राप्त भक्त के रूप में लोकप्रिय नंदवर वंश के वैष्णव आचार्य - - - - ताल्लपाक अन्नमय्य को ईश्वर का अवतार मान कर उनकी प्रशस्ति की, इस पर आचार्य अन्नमय्य ने पुरंदरदास को साक्षात विट्टल ही मानकर उनका यशोगान किया।

इस प्रकार अन्नमाचार्य के जीवनी, लेखक जो उनके पोते चिन्नन्ना के (1500 - 1558) कथन से विदित होता है यहाँ पर विशेष रूप से उल्लेखनीय विषय है कि पुरंदरदास ने अन्नमाचार्य के अवसान काल में उनके दर्शन किये थे। इस के बाद पुरंदरदास अपनी सारी संपदाओं को त्यागकर भिखारी बन अपने परिवार के साथ विजयनगर पहुँचे और वहाँ पर व्यासराय से दीक्षा ली। इसके पश्चात तिरुपति में अन्नमाचार्य से भेंट की थी। उस समय पुरंदरदास की उम्र लगभग 30 वर्ष की होगी। अपने पितामह की जीवनी लिखनेवाले चिन्नन्ना के कथन पर यदि हम विश्वास करेंगे तो पुरंदरदास का जन्म 1470 तथा मृत्यु 1564 ठहरता है।

समस्त विद्याओं में निष्णात

1470 में वरदप्प नायक तथा कमलांबा दंपति के एक पुत्र हुआ। माता पिता ने उनका नामकरण ''श्रीनिवास नायक'' किया। वरदप्प नायक मध्व ब्राह्मण थे। जौहरी के रूप में विशेष यश धनार्जन करके अत्यंत लोकप्रिय हो गये थे। अपनी परंपरागत रीति के अनुसार उचित अवस्था में वरदप्प नायक ने अपने पुत्र का उपनयन संस्कार संपन्न करा कर शिक्षा दिलाई। वरदप्पा जी संपन्न थे। इसलिए उनहों ने अपने पुत्र को संस्कृत तथा कन्नड़ में संपूर्ण शिक्षा दिलाई। धार्मिक विद्या में भी शास्त्रों का अध्ययन करवाया। साथ ही स्वयं जौहरी होने के कारण उन्होंने अपने पुत्र को रत्नों की परख का अभ्यास करवाया। 16 वर्ष की उम्र में ही इन सारी विद्याओं में वह किशोरनिष्णात हुआ। बचपन में श्रीनिवास नायक ने जो जो विद्याएँ सीखी थीं वे भविष्य में उन केलिए अत्यंत सहायक सिध्द हुई।

सहधर्मिणी - सरस्वतीबाई

श्रीनिवास नायक का विवाह अट्ठारह वर्ष की उम्र में सरस्वतीबाई से संपन्न हुआ। उसका जन्म एक धार्मिक प्रवृत्तिवाले परिवार में हुआ था। उस के मन में धर्म के प्रति आस्था, ईश्वर तथा पतिके प्रति निष्ठा तथा प्राणिमात्र के प्रति निष्ठा तथा प्राणिमात्र के प्रति दया का भाव था। सरस्वती बाई और पुरंदरदास के बीच असाधारण अनुराग था। वह अपने पति के समस्त कार्यो में सहभागिता होने के साथ, उसके सुख दुखों में समान रूप से भाग लेते हुए सच्चे अर्थों में सह धर्मचारिणी कहलाई। श्रीनिवास नायक की 20 वर्ष की उम्र में ही उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। अपने पिता के द्वारा कमाई गयी सारी संपत्ति उनको प्राप्त हुई। क्रमशः उस दंपति के वरदप्पा, गुरुरायुडु, अभिनवुडु तथा मध्वपति नाम के चार पुत्र और रुक्मिणी बाई नामक कन्या का जन्म हुआ।

महान लोभी

श्रीनिवास नायक का लक्ष्य केवल धनार्जन ही रहा। बचपन में जो कुछ धार्मिक शिक्षा प्राप्त की, उस का प्रभाव उस पर नहीं रहा। साधारण व्यक्तियों में पाई जानेवाली मानवता की दृष्टि भी उनके भीतर नहीं रही। धनार्जन के लोभ में पड कर स्वास्थ्य की चिंता तक नहीं करते थे। रत्नों के व्यापार में करोडों रुपये कमा कर ''नव कोटि नारायण'' के नाम से मशहूर हुए। कमाई बढ़ने के साथ उनकी कंजूसी भी बढ़ती गयी। याचकों को दुश्मन के समान मानते थे। कोई यदि धार्मिक प्रवचन करते तो कहते थे कि ये सब धन कमाने के बहाने हैं। इस कंजूसी की वजह से वे

नास्तिक बन गये। अपने पति की कंजूसी पर सरस्वती बाई बेहद परेशान भी। उसका जन्म एक परम आस्तिक तथा परोपकार करनेवाले परिवार में हुआ था। लेकिन उसके पति का दिल पत्थर का सा बन गया था। श्रीनिवास नायक रत्नों के व्यापार के निमित्त अकसर विजय नगर हो आया करते थे। रत्नों के व्यापार में उनकी सानी करनेवाला कोई न था। लेकिन उनकी यह कंजूसी बहुत दिनतक नहीं चली।

अपनी नथ दो

उन्हीं दिनों में एक अनोखी घटना घटी जिससे श्रीनिवास नायक के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ।

एक दिन एक बूढा ब्राह्मण एक बालक को अपने साथ ले आया और उस बालक के उपनयन संस्कार के लिए यथोचित दान देने की श्रीनिवास नायक से प्रार्थना की। श्रीनिवास नायक केवल कमाना जानता था। लेकिन उस धनके समुचित उपयोग करने की विधि से अपरिचित था। प्रति दिन श्रीनिवास नायक याचक को अगले दिन आने को कह कर दान देने से टालते थे। इस पर एक दिन वृध्द ब्राह्मण ने दृढ़ स्वर में पूछा - ''आप निश्चय ही कुछ देना चाहते हैं या नहीं, साफ़ - साफ़ बता दीजिए।'' श्रीनिवास नायक ने उस ब्राह्मण से पिंड छड़ाने का संकल्प किया। इस पर श्रीनिवास नायक ने दो सिक्के लाकर ब्राह्मण के हाथ धर दिये ब्राह्मण - लाचार होकर वहाँ से चला गया। इसके बाद वह ब्राह्मण सीधे श्रीनिवास नायक के घर पहुँचा और सरस्वतीबाई से दान देने की प्रार्थना की। सरस्वतीबाई ने दुखी होकर कहा- ''महानुभाव। मेरे पास अपनी कोई निजी संपत्ति नहीं है न?'' वृध्द ब्राह्मण ने कहा-

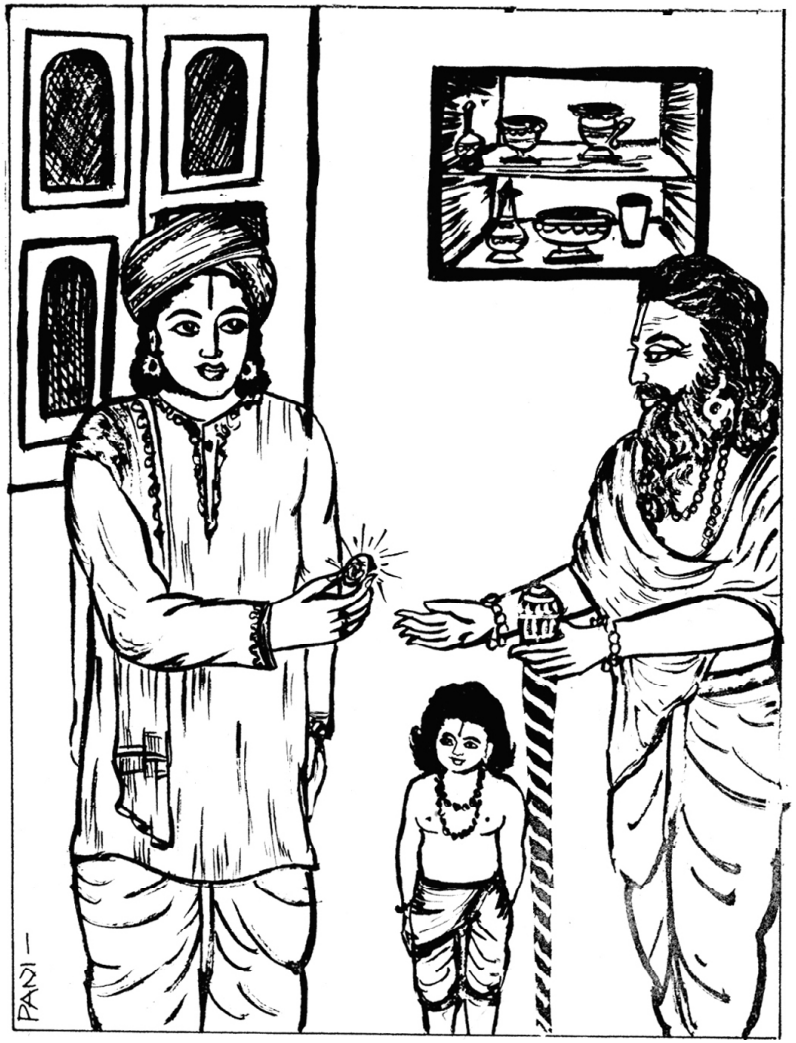

''तबतो तम अपनी नथ दे दो। मैं खुश हो जाऊँगा।'' इस पर सरस्वती बाई ने प्रसन्न होकर अपनी नथ निकाल कर याचक के हाथ सौंप पिया।

विषभरे पात्र में नथ

इसके बाद ब्राह्मण ने श्रीनिवास नायक की दूकान पर पहुँच कर नथ का मूल्य देने का अनुरोध किया। श्रीनिवास नायक रत्नों के पारखी थे। उस नथ को देख वे- आश्चर्य चकित हुए। उन्होंने ब्राह्मण से कहा- ''तुम थोडी देर बाद आना। मैं इसका मूल्य चुकाऊँगा। यह कह कर श्रीनिवास नायक तुरंत अपने घर पहुँचे। देखा, उनकी पत्नी की नाक में नथ नहीं है। सरस्वती बाई भयभीत हो गयी और भगवान के कक्ष में पहुँच कर विषपान करना चाहा। संयोग से उस विष भरे पात्र में नथ गिर पड़ी। अतिशय आनंद में आकर सरस्वती बाई ने वह नथ लाकर अपने पति के हाथ सौंप दी। श्रीनिवास नायक विस्मय में आ गये और उसी क्षण वे अपनी दूकान पर पहुँचे। लेकिन उन्हों ने देखा कि जहाँ उसे सुरक्षित छिपा कर रखा था वहाँ पर नथ नहीं है। गायब है। इस पर वे तुरंतु घर लौटे और अपनी पत्नी से पूछा- ''तुम साफ-साफ बता दो। क्या क्या हुआ?'' सरस्वतीबाई ने सारी बातें स्पष्ट बता दी। श्रीनिवास नायक ने सोचा कि यह कोई साधारण बात नहीं है। दैव योग से यह सब घटित हुआ है। जो वृध्द ब्राह्मण याचक बन कर आया था, वह साधारण व्यक्ति नहीं। स्वयं भगवान ने ही उस रूप में पधार कर मेरी आँखें खोल दी है।''

सरस्वती बाई प्रसन्न हो गयी

श्रीनिवास नायक का ज्ञाननेत्र खुला। उन्होंने सारे शहर में वृध्द ब्राह्मण को खोजा। लेकिन वह कही दिखाई नहीं दिया। किसीने नायक

को बताया कि वह वृध्द ब्राह्मण विट्ठल मंदिर की ओर चले गये। नायक ने मंदिर में जाकर ढूँढा, पर वह कहीं दिखाई नहीं दिया। उसका हृदय व्याकुल हो उठा। उसने अपनी पत्नी से पूछा- ''बताओ, उस वृध्द ब्राह्मण ने तुम से क्या कहा था?'' उसे मालूम हुआ कि यदि अपनी सारी संपत्ति को त्याग करके भगवान की सेवा में अपने को अर्पित करें तो उनके दर्शन होंगे। इस पर पुरंदरदास ने अपने भौतिक सुखों को त्यागने का संकल्प किया और अपनी जमीन-जायदाद रत्न-आभूष्ण, धन-संपत्ति गरीबों में बांट दिया और वह एक भिखारी बना। पत्नी व बच्चों के साथ घर से कुछ लिये बिना जीने का उसने निश्चय कर लिया। इस परिवर्तन को देख सरस्वतीबाई फूली न समाई। श्रीनिवास नायक कंठ में तुलसीमाला धारण कर कंधे पर तंबूरा लिये एक दास के रूप में बदल गया। तब तक वह नवकोटि नारायण था, पर अब यह भगवान को समर्पित एक सेवक था, दास था।

फेंक दिया

उन दिनों में विजय नगर की राजधानी हम्पी में राजगुरु के रूप में लोकप्रिय व्यासराय मध्व मत का प्रचार किया करते थे। श्रीनिवास नायक अपने परिवार समेत हम्पी के लिए निकल पडे। वह जंगल का रास्ता था। साथ में मदद के लिए कोई न था। उसे लगा कि सरस्वतीबाई भयभीत हो रही है। इसे भांप कर श्रीनिवास नायक ने पूछा- ''सरस्वती, डरती क्यों हो?'' सरस्वती ने उत्तर दिया - यह तो जंगल है न! हमारे साथ और कोई नहीं है। शायद चोरों का हमला हो जाए। इस बात का मुझे डर है। ''हमने अपनी सारी संपत्ति त्याग दी है। अब हमारे पास है ही क्या? जिसे चोर लूट सके'' श्रीनिवास नायक ने उत्तर दिया।

''हाँ, हाँ, वैसे तो कुछ नहीं है- - - - - - - - ''

''फिर क्या है?- - - - - - - - -''

''सोने का एक छोटा सा पात्र साथ में लाई हूँ''

''और, ऐसी बात है। दिखाओ तो सही।'' यह कहकर श्रीनिवास नायक ने कपडों की गठरी से उस पात्र को निकाला और तत्काल जंगल में उसे फेंक दिया।

''अब हमें कोई डर नहीं है। निश्चिंत होकर हम अपनी यात्रा कर सकते हैं।'' -

श्रीनिवास नायक ने गहरी सांस लेकर कहा। सरस्वती बाई भी निश्चिंत हो गयी। इसके बाद उनकी यात्रा सफल रही। आखिर वे हम्पी पहुँचे।

मैं पहले ही जानता था

उस दिन सवेरे श्रीनिवास नायक व्यासराय के दर्शन करने पहुँचे। व्यासराय उस वक्त पूजा कर रहे थे। पूजा की समाप्ति पर भक्तों की भीड में स्थित श्रीनिवास नायक को संबोधित कर व्यास राय ने कहा - ''श्रीनिवास! यह प्रसाद ग्रहण करो! ''श्रीनिवास नायक एक दम विस्मय में आ गया। फिर संभल कर व्यासराय के समीप पहुँचा और उनके चरणों में झुक गया। इस पर व्यासराय ने प्रसन्न होकर कहा-'' मैं पहले ही जानता था कि तुम अवश्य मेरे पास आओगे। मुझे बडी खुशी हुई। आज से तुम मेरे मुख्य शिष्य बनकर ''पुरंदर विट्टल'' मकुट से कीर्तन रचोगे और जनता में जाकर तुम भक्ति का प्रचार करोगे।'' यों समझा कर व्यासराय ने श्रीनिवास को दीक्षा दी। और मध्व मत सिध्दांत का

उपदेश दिया। साथ ही एख हरिदास को जीवन पर्यंत जिन नियमों का पालन करना है, वे सब समझाये। श्रीनिवास नाम दीक्षा पाने के बाद 'पुरंदरदास' हो गया। उन्होंने पुरंदरदास नाम से ही ख्याति प्राप्त की। और वे दास-जीवन के माधुर्य से अवगत हुए।

वचन रचना से लोकप्रियता

पुरंदरदास ने भक्ति तथा वैराग्य का परिचय कराते चार लाख पचहत्तर हजार पदों की रचना की। लेकिन आज उनमें से कुछ सौ पद ही उपलब्ध हैं। इन पदों की रचना के कारण पुरंदरदास उत्तम पदकर्ता के नाम से विख्यात हुए। इस का मुख्य कारण व्यास राय ही। दर असल व्यासराय श्रीपादराय नामक गुरु से दीक्षित हुए थे। श्रीपादराय कर्नाटक राज्य के कोलार जिला मुलबागल के निवासी थे। ये दोनों संत तत्ववेत्ता थे। पंडित थे। साधु थे और ब्रह्मसूत्रों के आधार पर कन्नड भाषा में पद रचना करके मध्वाचार्य के द्वैत मत के प्रचारक बने। व्यासराय ने ''श्रीकृष्ण'' मकुट से तथा श्रीपादराय ने ''रंग विट्ठल'' मकुट से पद-रचना की। विशेष लोकप्रिय बने। व्यासराय ने पुरंदरदास को ज्ञान-ध्यान. मंत्र-तंत्र, जप-तप इत्यादि का उपदेशं दिया। उन दिनों में संस्कृत भाषा में ही धार्मिक चर्चाएं हुआ करती थी। इस केलिए श्रुति और स्मृतियों में पांडित्य आवश्यक था। पुरंदरदास ने सर्व साधारण जनता केलिए कन्नड में पद-रचना करके प्रचार किया।

''मध्वमत सिध्दांतों का प्रचार करो।'' कह कर व्यासराय ने श्रीनिवास नायक को दीक्षित किया और उनको मध्वमत सिध्दांत का उपदेश दिया। साथ ही हरिदास को समझाया कि जीवन में किन किन

रीतियों का पालन करना चाहिए। उस रमय से श्रीनिवास नायक ''पुरंदरदास'' कहलाये। इसी नाम से वे अत्यंत लोकप्रिय हुए।

पद-रचना में प्रशस्ति

पुरंदरदास ने भक्ति तथा वैराग्य का परिचय कराते चार लाख पचहत्तर हजार पदों की रचना की हैं। लेकिन आज उन में से कुछ सौ पद मात्र उपलब्ध हैं। इस प्रकार उत्तम पद-रचना के कारण पुरंदरदास एक श्रेष्ठ पदकर्ता के रूप में विख्यात हुए। इसका श्रेय व्यासराय को

जाता है। व्यासराय ने श्रीपादराय नामक गुरु से उपदेश प्राप्त किया था। श्रीपादराय वर्तमान में कोलार जिला के अंतर्गत स्थित मुलबागल के निवासी थे। ये दोनों तत्व ज्ञानी, पंडित, साधु तथा ब्रह्मसूत्रों के आधार पर कन्नड भाषा में पद-रचना के द्वारा मध्वाचार्य के द्वैत मत प्रचार करनेवाले महानुभाव थे।

व्यासराय ने ''श्रीकृष्ण'' मकुट के साथ तथा श्रीपादराय ने ''रंगविट्ठल'' मकुट से पद-रचना किया करते थे। व्यासराय ने पुरंदरदास को ज्ञान-ध्यान, जप-तप, मंत्र-तंत्र इत्यादि का उपदेश दिया। उस काल खंड में संस्कृत में ही धार्मिक चर्चाएँ हुआ करती थीं। वे श्रुति व स्मृतियों में निष्णात थे। परंतु पुरंदरदास ने कन्नड़ में साधारण प्रजा केलिए पद रचना करके अपना प्रचार आरंभ किया।

दासों के दास पुरंदरदास

इस के बाद दो प्रकार के कूट स्थापित हुए। उनके नाम व्यास कूट तथा दास कूट थे। भगवान का नाम-स्मरण करते गीत गाते भिक्षाटन करते पुरंदरदास अपना जीवन-यापन करने लगे। उनके पद प्रामाणिक बनकर जनता के कंठ हार बने। पुरंदरदास ने वेद-शास्त्र तथा पुराणों में वर्णित प्रज्ञा-प्राभव को अपने पदों में प्रकट किया।

पुरंदरदास ने जो कुछ कहा और लिखा, वे सब गुणात्मक दृष्टि से ही नहीं बल्कि मौलिक दृष्टि से भी उपनिषदों के सार तत्व से कम नहीं हैं। साधारण प्रजा के लिए किया गया यह सद् प्रयास है। अचिरकाल में ही ये पद ''पुरंदरोपनिषद'' नाम से प्रसिध्द हुए। यही कारण है कि वे अपने गुरु व्यासराय की प्रशंसा के पात्र बने और उन्हेंने पुरंदरदास को ''दासों के दास'' कहकर आशीर्वाद दिया।

द्वैत, अद्वैत और विशिष्टाद्वैत

पुरंदरदास की भक्ति के संबंध में परिचय पाने के पूर्व उनके पूर्व के आचार्यों की भक्ति-पध्दति का परिचय पाना आवश्यक है। मध्वाचार्य ने द्वैत मत, रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत तथा शंकराचार्य ने अद्वैत मत

का प्रचार किया। द्वैतमतानुसार आत्मा और परमात्मा भिन्न हैं याने अलग हैं। अद्वैत मत की दृष्टि से आत्मा और परमात्मा अभिन्न हैं अर्थात एक हैं। विशिष्टाद्वैत के अनुसार आत्मा और परमात्मा भिन्न होते हुए भी अंत में परमात्मा में विलीन होकर एक हो जाते हैं। यहाँ पर हमें ध्यान देने की बात है- द्वैत तथा अद्वैत मत के अनुयायियों के इष्टदेव विष्णु हैं। माने हरि सर्वोत्तम हैं। अर्थात वे ही अधिकारी हैं। भक्त जन उनके दास हैं याने सेवक हैं। किंतु इस में थोडा अंतर है। विशिष्टाद्वैत मत के अनुसार भक्ति भाव से यदि भक्त भगवान के चरणों में अपने को अर्पित करते हैं तो भगवान उन पर अनुग्रह करके उनका उध्दार करते हैं। तब आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाती है। लेकिन द्वैत मतानुसार जीवात्मा एवं परमात्मा सदा पृथ्वी में जहाँ दोनों अलग हुआ करती हैं, उसी प्रकार परलोक या स्वर्ग में भी अलग-अलग होती हैं। यहाँ पर कर्म शक्तिशाली है। इस के लिए वैराग्य ही मार्गनिर्देशक तत्व बन जाता है। ज्ञानी होकर इस मर्म को समझना पड़ता है। भक्ति एवं विवेक को एक होकर चलना पड़ता है। तभी भक्ति के द्वारा मुक्ति प्राप्त होती है।

नव विध भक्ति

यह भक्ति श्रवणं, कीर्तनं, स्मरणं, पाद सेवनं, अर्चनं, वंदनं, दास्यं, तथा आत्मनिवेदनं नाम से नौ प्रकार की होती है। फिर भी इनमें प्रधान रूप से मधुर, वात्सल्य, सख्य, सेव्य तथा शांत नाम से पांच परम भाव होते हैं। आलंकारियों का कथन है कि ये रसस्थिति को प्राप्त भाव हैं। इस ज्ञान को मध्वाचार्य से श्री पादराय तथा व्यासराय ने प्राप्त किया। व्यासराय से पुरंदरदास ने इस ज्ञान को समग्र रूप में ग्रहण किया।

मधुर भक्ति

पुरंदरदास के पदों में नवविध भक्त तथा पांच परम भाव हैं। राधा-कृष्ण के माने गोपी कृष्ण है। पुरंदरदास के पदों में भागवत भक्ति दृष्टि गोचर होती है। इस का तात्पर्य है कि मधुर भक्ति स्पष्ट रूप से दर्शित है। इसके साथ साथ बालकृष्ण द्वारा मक्खन की चोरी करना, गोपिकाओं का यशोदा से शिकायत करना, गोपिकाओं के साथ कृष्ण का विहार करना इत्यादि श्रीकृष्ण की लीलाओं का पुरंदरदास ने भव्य वर्णन किया है। इस प्रकार जीवन-सागर से तर गये हैं। इसी के साथ सुलभ एवं सरल शैली में आम जनता की समझ में आने लायक पुरंदरदास ने भक्ति, ज्ञान, नीति, वैराग्य इत्यादि का सुंदर वर्णन किया है।

हरि का नामस्मरण कीजिए

हरि तो सर्वोत्तम हैं। आत्मनिवेदन से पूर्ण भक्ति अत्यंत महत्व पूर्ण हैं। मुक्ति प्राप्त करने का प्रमुख मार्ग भक्ति हैं। पुरंदरदास का विश्वास है कि भक्ति के बिना बाह्य सारे आडंबर याने दिखावा व्यर्थ हैं। इस कलियुग में यदि कोई आस्था एवं विश्वास के साथ हरि का स्मरण करें तो मुक्ति प्राप्त होती है। इसीलिए उद्‌बोधन करते हैं ''हे मन, तुम हरि नाम का स्मरण करके मक्ति प्राप्त करो।''

आगे बताते है, हरि के प्रति अचंचल विश्वास एवं भक्ति की आवश्यकता है। यही प्रधान तत्व है। स्नान, जप-तप इत्यादि की कोई आवश्यकता नहीं है। उनका कथन है कि भक्ति के साथ मानव को ज्ञान भी प्राप्त करना है। वे जीवन-सत्य से भली भांति परिचित थे। इसीलिए उन्होंने आचारों के नाम पर होनेवाले अनाचारों का खंडन किया और

नीति का उपदेश दिया। वैराग्य का भी विशद परिचय दिया। ये सारे तत्व हम पुरंदरदास के पदों में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

जीने केलिए खुराक चाहिए

दास वृत्ति स्वीकार करने के कारण पुरंदरदास को अनेक यातनाएँ झेलनी पड़ीं। लेकिन श्रीकृष्ण भगवान के अनुग्रह से उन्होंने बडी प्रसन्नता के साथ उनका सामना किया। साथ ही देश और काल की स्थितियों से संबंधित सारी अड़चनें दूर हो गयीं और श्रीकृष्ण के साथ नैकट्य प्राप्त होने के कारण उनको पूर्ण सुख उपलब्ध हुआ। उनके भीतर का अहंकार गायब हो गया। ऐसी प्रतीति है कि पुरंदरदास के जीवन में अनेक अनोखे प्रसंग एवं महिमाएँ घटीं। धन-धान्य प्रधान नहीं है। भगवान की भक्ति प्रधान है जीने केलिए केवल अन्न की आवश्यकता है। उससे अधिक खुराक की जरूरत नहीं है। इस सत्य को पुरंदरदास ने अपने आचरण द्वारा प्रमाणित किया। उन्होंने अपने सिध्दांतों को आम जनता द्वारा गाने व खेलने लायक जनता की सरल एवं सुबोध भाषा में प्रचार किया और इस प्रकार समाज में जागृति पैदा की। वे मानवों के व्यक्तित्वों का उध्दार करनेवाले परम भक्त थे।

आतिथ्य कैसे देना चाहिए?

पुरंदरदास विजय नगर में एक हरिदास के रूप में अपना जीवन गुजारते थे। उन दिनो में एक घटना घटी। अपना सर्वस्व त्याग करनेवाले पुरंदरदास पैरों में पायल धारण कर हाथ में तंबूरा लिये पद गाते प्रजा को उद्‌बोधन करते गली-गली घूमा करते थे। जो कुछ भिक्षा के रूप में प्राप्त होता उससे वह अपना परिवार चलाते थे।

एक दिन उनके एक रिश्तेदार उनके घर आ पहुँचा। तब तक पुरंदरदास घर लौटे न थे। अतिथि को खिलाने के लिए घर में कुछ बचा न था। इस पर सरस्वती बहुत दुखी हुई। तुरंत वह अपने पड़ोसी मैलारप्पा के घर पहुँची। उनकी पत्नी से परुसवेदी ले आयी, तत्काल सोना तैयार करके उसे दूकान में बेचा और प्राप्त धन से उन्होंने अपने अतिथि को मिष्टान्न भोजन कराया। इस बीच पुरंदरदास घर लौटे और अपनी पत्नी के मुंह से सारा वृत्तांत जान कर नाराज हुए और रसोई के साथ परुसवेदी को भी पुष्करिणी (तालाब) में फेंकवा दिया। फिर उन्हों ने अपने अतिथि से स्पष्ट शब्दों में कहा- ''मैं भिक्षाटन करके अपना जीवन बिताता हूँ। मेरे साथ समान रूप से हिस्सा लेनेवालों को ही मेरे घर में अतिथ्य प्राप्त होगा राजसी अतिथ्य हमारे घर में संभव नहीं है।'' आगत अतिथि पुरंदरदास की निंदा करके वहाँ से चला गया। इस पर सरस्वती बाई दुखी हो गयी। साथ ही मैलारप्पा की पत्नी परुसवेदी वापस करने के लिए सताने लगी।

मैलारप्पा भी दास बन गया

पुरंदरदास की आज्ञा पाकर उनका पुत्र मध्वपति पुष्करिणी में कूद पडा और एक के बदले चार परुसवेदी लाकर मैलारप्पा की पत्नी के हाथ सौंप दिया। वह प्रसन्न होकर अपने घर चली गयी। लेकिन पुरंदरदास के उपदेशों से मैलारप्पा में ज्ञानोदय हुआ। उसने पुरंदरदास के पैरों पर गिरकर माफी मांग ली। इस पर पुरंदरदास ने निर्मल हृदय से कहा- ''पुरंदर विट्ठल ही आपकी रक्षा करेंगे'' मैं आज भाग्यवान हो गया'' यों कह कर परुसवेदी के साथ अपनी सारी संपत्ति को भी त्याग

दिया। फिर एक गरीब तथा भक्त के रूप में दास बन गया। इस प्रकार पुरंदरदास के भक्तिभाव से प्रभावित होकर कई लोग दास बन गये।

गरीबी का वरण किया

पुरंदरदास के गुरु व्यासराय सम्राट श्रीकृष्णदेवराय के गुरु थे। हम्पी को राजधानी बनाकर राज्य करनेवाले राजाओं में श्रीकृष्णदेवराय प्रमुख थे। श्रीकृष्णदेवराय के शासनकाल में विजय नगर साम्राज्य चरम वैभव तक पहुँच गया था। व्यासराय ने एक संदर्भ में श्रीकृष्णदेवराय को ''कुहू योगम्'' नामके खतरे से बचाया था। उस खतरे के समय राजा के आसन पर बैठ कर व्यासराय ने उस अनर्थ से बचाया था। श्रीकृष्णदेवराय ने व्यासराय को अग्रहार-जमीन-जायदाद तथा अन्य प्रकार की संपत्ति देकर उनका सम्मान किया था। इसी प्रकार श्रीकृष्णदेवराय ने पुरंदरदास की सादगी तथा उनके आत्म निवेदन को पहचान कर उन्हें धन, धान्य तथा अन्य प्रकार के उपहार देकर उनका सम्मान किया था। पुरंदरदास अपने सर्वस्व को दान कर चुके थे। इस लिए राजा से प्राप्त समस्त उपहारों को उन्होंने गरीबों में बांट दिया।

आपका ऐश्वर्य महान है या मेरा?

इसका कारण श्रीकृष्णदेवराय जानते न थे। उन्होंने सोचा कि मैं ने जो उपहार पुरंदरदास को प्रदान किये हैं, संभवतः उनसे वे संतुष्ट नहीं है। यों विचार कर किसी संदर्भ में राजा ने पुरंदरदास को अपने दरबार में आमंत्रित किया और अपना यह संदेह प्रकट किया। इस पर पुरंदरदास ने गंभीर होकर उत्तर दिया- ''मैं नवकोटि नारायण'' की उपाधि से सर्वत्र मशहूर था। मैं ने अपने सर्वस्व को गरीबों में क्यों बांट

दिया, इस का मर्म उन्होंने राजा को समझाया। इस के बाद उन्होंने जो पद रच कर राजा को सुनाये, उन का तात्पर्य था - ''वास्तव में भौतिक संपदाओं से यशस्वी बने राजा की अपेक्षा मेरी आध्यात्मिक संपदा कहीं महान है इस दृष्टि से मैं महान हूँ। आइये हम इसका निर्णय करेंगे कि आपका ऐश्वर्य महान है या मेरा।'' पुरंदरदास के पदों में इस बात की चेतावनी थी। उनके पद सुनकर राजा अत्यंत आनंदित हुए और उन्होंने पुरंदरदास को साक्षात भगवान पुरंदर का अवतार मान कर उनका सम्मान किया।

वे दोनों ही समझते थे

उपरोक्त घटनाओं से स्पष्ट विदित होता है कि पुरंदरदास के मन में भौतिक संपत्तियों के प्रति किसी भी प्रकार का मोह नहीं है। इसी प्रकार कुछ ऐसी घटनाएँ भी उनके जीवन में घटित हुई हैं जिन में उन्होंने भगवान को ही अपना दास बना लिया था। पुरंदरदास कई बार व्यासराय के साथ तिरुपति की यात्रा पर आते-जाते थे। इस के पूर्व ही संकीर्तनाचार्य के रूप में प्रसिध्द अन्नमाचार्य को श्रीवेंकटेश्वर का अवतार समझकर उनका यश गाया था। इसी प्रकार अन्नमाचार्य ने भी पुरंदरदास को भगवान पुरंदर विट्ठल का अवतार मान कर उनकी प्रस्तुति की थी। इस से हमें विदित होता है कि आम आदमी भले ही उनकी महिमाओं से अनभिज्ञ हों, पर वे दोनों परस्पार एक दूसरे की महिमाओं से अवगात थे।

भगवान ने ही सेवा की

राजा कृष्णदेवराय अपने गुरु व्यासराय के साथ अकसर तिरुपति जाकर श्रीवेंकटेश्वर की पूजा करते थे। किसी संदर्भ में उनके साथ

पुरंदरदास भी तिरुपति पहुँचे। भिक्षाटन में जो कुछ प्राप्त था, उस सबको पुरंदरदास गरीबों में अन्नदान कर रहे थे। उस समय भक्तों को परोसने के लिए पर्याप्त घी नहीं था। तुरंत पुरंदरदास ने अपने शिष्य अप्पन्ना को घी लाने का आदेश दिया। काम की भीड में अप्पन्ना ने अनसुनी कर दी। वह घी लाने नहीं गया, परंतु कोई अप्पन्ना के भेष में घी लेकर आ पहुँचा। सभी भक्तों को घी परोसा गया। बाद को पुरंदरदास को यह बात विदित हुई। उस ने समझ लिया कि उनके आराध्य भगवान ने ही दास बन कर भक्तों की सेवा की है। यह भांप कर वे अत्यंत आनंदित हुए। अपने आराध्य देव पुरंदर विट्ठल से क्षमा याचना की। इस प्रकार भगवान के द्वारा सेवा करानेवाले भक्ताग्रेसर हैं पुरंदरदास।

विट्ठल ने मार खाई

इसी प्रकार की एक और घटना घटित हुई थी। वह इस से भी कहीं आश्चर्य जनक वृत्तांत है। उन दिनों में पुरंदरदास अपने आराध्य भगवान विट्ठल की सेवा में निमग्न थे। रात के समय उनको अत्यंत प्यास लगी। पुरंदरदास ने अपने शिष्य अप्पन्ना को पानी लाने का आदेश दिया। नींद की खुमारी में अप्पन्ना ने ध्यान नहीं दिया। इसलिए वह पानी नहीं लाया। लेकिन थोड़ी देर बाद शिष्य पानी लेकर आ पहुँचा। पुरंदरदास ने सोचा कि वह व्यक्ति अपना शिष्य ही, उसने पानी लाने में देरी की, इसलिए गुस्से में आकर पुरंदरदास उस की शिर पर मारा। वह व्यक्ति मार खाकर चला गया। गुरुजी सो गये। अगले दिन प्रातः काल अर्चकों ने देखा कि पुरंदर विट्ठल स्वामी की प्रतिमा का शिर फूल गया है और प्रतिमा की आँखों से आँसू की धारा बह रही है। अर्चकों ने अनेक प्रकार से प्रयत्न किया लेकिन शिर उसी तरह फूला हुआ था और प्रतिमा की आँखों से

आँसू बराबर झर रहे थे। यह समाचार पाकर पुरंदरदास मंदिर के गर्भालय में पहुँचा। उस विचित्र दृश्य को देखा। तब उनको महसूस हुआ कि रात को उन्होंने अपने शिष्य अप्पन्ना को नहीं, साक्षात शिष्य के रूप पधारे अपने आराध्य पुरंदर विट्ठल को ही मारा था। इस पर वे अत्यंत दुखी हुए। उसने दुखी हृदय से पुरंदर विट्ठल से क्षमा करने की प्रार्थना की। उनकी भक्ति पर प्रसन्न हो स्वामी ने उन्हें अनुगृहीत किया। इस के बाद भगवान के सिर पर फूला हुआ भाग ठीक हो गया। प्रतिमा की आँखों के आँसू भी थम गये। इस विचित्र घटना को देख भक्त जन पुरंदरदास की भक्ति पर विस्मय में आ गये और अनेक प्रकार से उनकी प्रशंसा की।

वह बेचारा भोला है, उस को छोड़ दो

इससे कहीं अधिक एक विचित्र घटना घटित हुई। एकबार भगवान पुरंदर विट्ठल के सोने का कड़ा गायब हो गया। पुजारी ढूँढ-ढूँढ कर थक गये, लेकिन कड़ा मिला नहीं। आखिर उस नगरी की प्रसिध्द वेश्या के हाथ में लोगों ने देखा। वह विट्ठल स्वामी के मंदिर में पूजा कराने आयी थी। पुजारियों ने वेश्या से पूछा- ''तुमको यह कड़ा कैसे प्राप्त हुआ?''

वेश्या ने जवाब दिया कि वह कड़ा उसी का हैं। उस कडे के साथ विट्ठल के दूसरे हाथ में स्थित कड़े को जांच कर देखा तो दोनों एक समान दिखाई दिये। प्रधान अर्चक ने पूछा ''तुमने स्वामी के हाथ के कडे की चोरी की है। सच-सच बताओं।'' इस पर वेश्या ने निर्भयता पूर्वक जवाब दिया- ''सचमुच यह कड़ा मेरा ही है। मैं ने चोरी नहीं की'' प्रधान अर्चक ने क्रोध में आकर डांटा- ''तुम ने कडे की चोरी की, उलटे हमको

बेवकूफ बनाती हो! सच नहीं बोलोगी तो तुमको कड़ी सजा मिलेगी'' ''मैं ने जब चोरी ही नहीं की तो मुझे सजा कैसे देंगे?'' वेश्या ने धमकी के स्वर में उत्तर दिया।

इस पर प्रधान अर्चक कोध में आये और आज्ञा दी कि इस औरत को खम्भे से बांधकर कोडे से मारो।

कोडे की मार खाकर वेश्या चिल्ला उठी और बोली -'' कल रात को पुरंदरदास ने मेरे घर आकर दिया है।'' वेश्या की बात पर पुजारियों को विश्वास नहीं हुआ। पुजारी विस्मय में आगये पुरंदरदास जैसे महान भक्त क्या वेश्या के घर गये? फिर भी पुजारियों ने उसी वक्त पुरंदरदास को बुलवाकर उन से पूछा। पुरंदरदास ने आश्चर्य में आकर जवाब दिया- '' मैं ने तो नहीं दिया था। इस पर उसी खम्भे से पुरंदरदास को बांधकर उनपर कोडे लगवाये। अधिकारियों ने खूब पीटा फिर भी पुरंदरदास प्रसन्नतापूर्वक उस पीडा को सहते रहे। आखिर पुरंदरदास ने सोचा कि यह सब स्वामी पुरंदर विट्ठल का चमत्कार है। उन्होंने भांप लिया कि उनका वेष धर कर विट्ठल स्वामी वेश्या के घर जाकर सोने का कड़ा उसे दे आये हैं। उन के बदन पर कोडे की मार पड़ती ही जा रही थी। इसी समय मंदिर के गर्भगृह से आवाज आई- ''

''पुरंदरदास इस घटना के बारे में कुछ नहीं जानता। उसको छोड़ दो।'' इस पर उसे बंधन-मुक्त करके अधिकारियों तथा पुजरियों ने उनसे क्षमा मांगी। पुरंदरदास ने प्रसन्नता पूर्वक उनको क्षमा कर दिया। पुरंदरदास समझ गया कि एक बार स्वामी विट्ठलदास के शिष्य के रूप में आये थे। तब पुरंदरदास ने उनको पीटा था। इस के लिए विट्ठल स्वामी

ने इस प्रकार बदला लिया है। इस घटना को पुरंदरदास ने भगवान की महिमा बताकर गान किया है।

इस प्रकार पुरंदरदास के जीवन में अनेक प्रकार की अद्भुत घटनाएँ घटित हुई हैं। अनेक महिमाएँ भी छटीं, पुरंदरदास ने भगवान को अपना दास बनाया है, ऐसे महान भक्त हैं वे।

सब कोई प्रभावित हुए

कर्नाटक संगीत के लिए पुरंदरदास की सेवाएँ अमूल्य है। उनके पदों से विदित होता है कि उन्होंने लगभग ७०-८० रागों का प्रयोग किया है। उनके पदों में संगीत और साहित्य का सरल और सुलभ रूप परिलक्षित है। ताल-लय का भी उन्होंने अपने पदों में ध्यान रखा। उन्होंने संगीत की शिक्षा को सुलभतर बनाया। साथ ही संगीत के प्रशिक्षणार्थियों को आसानी से सीखने के अनुकूल गीत रचे। आज उसी पध्दति पर संगीत सिखाने का क्रम चल रहा है। बाद में प्रसिध्द हुए सभी वाग्गेयकार पुरंदरदास की शैली से प्रभावित हुए हैं।

कन्नड भाषा में अत्यंत मनोहर पद-रचना करनेवाले महान वाग्गेयकार पुरंदरदास ही थे। बानगी लीजिऐ।

क्या वेंकटेश्वर को देखा है?

कन्नड में रचित पद का भावार्थ यों है-
आप लोगों ने क्या धनी वेंकटेश्वर को देखा है।

देखा है, धनी। तिरुमल शिखामणि को जिस के चरणों में पायल शोभित हैं पीतांबर पर करघनी शोभित व्यक्ति को देखा है।

अत्यंत प्रकाशवान माणिक के स्वामी को देखा है
स्वर्ण हार, पदक तथा कौस्तुभ धारी को देखा है
इस पद में भगवान वेंकटेश्वर का आँखों देखा दृश्य वर्णित है।

बबूल वृक्षों के समान् है

अर्थात पृथ्वी पर दुष्ट लोग बबूल वृक्षों के समान हैं -

नीचे से ऊपर तक बबूल के कांटे होते हैं।

धूप में थककर लौटे व्यक्तियों केलिए छाया नहीं है।

भूख से पीडितों केलिए फल नहीं है अब फूलों की बात क्या कहूँ?

उनमें खुशबू नहीं होती है।

आखिर बैठने के लिए जगह नहीं है

यहाँ तक कि फूलों का रस विष जैसे कडुआ है।

इस पद में दुष्ट व्यक्ति की तुलना बबूल के पेड के साथ की गयी है

श्रीकांत को भजो!

दांत हिल गये

धातुओं की पटुता ढीली हो गयी।

नारियाँ वृध्दावस्था से घृणा कर रही है

शुष्क देह के लिए चिंता क्यों करें

रे मन! इस मर्म को समझ

श्रीकांत को भजो, ईश्वर को भजो।

इस में अत्यंत सहज रूप में स्वभावोक्ति में वृध्दावस्था का वैराग्य भाव वर्णित हुआ हैं।

पुरंदरदास मंडप

इसी प्रकार सहज शैली में पद-रचना करके मानव समाज को उद्बोधित करते अधिकांश समय हम्पी में तथा पुरंदरपुर में पुरंदरदास ने बिताया और अंत में अपने गुरु के आदेश पर तीर्थयात्राएँ की। उन्होंने जिन तीर्थों की यात्रा की, उन में तिरुपति, अहोबलम, कांची तथा बेलूर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन क्षेत्रों के दर्शन के समय पुरंदरदास ने देवताओं के मकुटोंके साथ अनेक पद रचे। प्रतीति है कि श्रीकृष्णदेवराय ने पुरंदरदास के लिए तिरुपति में एक मण्डप बनाकर उनको सौंपा। उसी मण्डप में अपने पूजा-कार्यक्रम संपन्न करते थे।

पुरंदरदास ने ही कीर्तन शैली का उध्दार किया। कर्नाटक में संगीत व साहित्यों का उध्दार करनेवाले महानुभाव थे वे। कर्नाटक संगीत केलिए सुंदर मार्ग प्रशस्त करनेवाले वे महानुभाव थे। इस प्रकार भावी वाग्गेयकारों केलिए पथ प्रदर्शक बने। इसीलिए वे ''कर्नाटक संगीत-पितामह'' की उपाधि से विभूषित हुए।

अन्यधर्मों के प्रति सहिष्णुता

धार्मिक विद्वेष को दूर कर सभी धर्मों के बीच समरसता पैदा करनेवाले महामानव थे पुरंदरदास। उन्होंने जाति, धर्म तथा वर्गों के बीच विभेद का खण्डन किया। धार्मिक सहिष्णुता उनके चरित्र का महान गुण था। पुरंदरदास ने मध्वाचार्य द्वारा स्थापित द्वैत मत को स्वीकारा। किंतु

विशिष्टाद्वैत तथा अद्वैत मतों के अनुयायिकों के साथ उनका किसी प्रकार का वैषम्य न था। शैवमतावलंबियों के साथ भी वे सौहार्द पूर्ण व्यवहार करते थे। हरिजनों के साथ भी प्रेम पूर्ण व्यवहार करते थे। जन्मतः उच्च होने पर भी कर्म के द्वारा पंचम बने लोग उनकी दृष्टि में नीच मानव हैं।

मानव जीवन का उध्दार करनेवाले महिमान्वित पुरंदरदास ही थे। सदा-सदा के लिए वे वंदनीय, वे चरितार्थ हैं।

* * *